

क्यासानूर फॉरेस्ट डज़ीज़

[स्रोत: द हट्टि](#)

कर्नाटक में वायरल संक्रमण [क्यासानूर फॉरेस्ट डज़ीज़ \(KFD\)](#) के प्रभाव के कारण वर्ष 2024 में अब तक दो व्यक्तियों की मृत्यु हो गई है।

- वर्तमान में इसके कारण होने वाली मौतों की संख्या 560 से अधिक है। वर्ष 1956 में [शविमोगगा ज़िले](#) के वनों में इस संक्रमण पता चला।

क्यासानूर फॉरेस्ट डज़ीज़ (KFD) क्या है?

परिचय:

- क्यासानूर फॉरेस्ट डज़ीज़ (KFD), एक [ज़ूनोटिक बीमारी](#) है तथा यह सर्वप्रथम बंदरों में पाई गई थी जिसके परिणामस्वरूप इसे बोलचाल की भाषा में "मंकी डज़ीज़" कहा जाता है।
- यह [क्यासानूर फॉरेस्ट डज़ीज़ वायरस \(KFDV\)](#) के कारण होता है जो मुख्य रूप से [मनुष्यों और बंदरों](#) को प्रभावित करता है।
 - इसकी पहचान सर्वप्रथम वर्ष **1957** में कर्नाटक के क्यासानूर वन के एक बीमार बंदर में की गई थी। तब से प्रतिवर्ष 400-500 व्यक्तियों के इससे संक्रमित होने के मामले दर्ज किये जाते रहे हैं।
 - अंततः KFD संपूर्ण [पश्चिमी घाट](#) में संचरित होती एक [गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या](#) के रूप में उभरी।

संचरण:

- प्राकृतिक परिवेश में यह [वषिणु](#) मुख्य रूप से [हारड टकिंस \(हेमाफिसिलिस सपनिगिरा\)](#), बंदरों, कृतकों तथा पक्षियों में मौजूद रहता है।
- मनुष्यों में यह संक्रमण [टकि \(कलिनी\) के काटने](#) अथवा किसी संक्रमित जानवर (बीमार अथवा हाल ही में मृत बंदर) के संपर्क में आने के बाद फैल सकता है।

उपस्थिति:

- सामान्य तौर पर यह संक्रमण नवंबर के अंत से जून माह के बीच तक [शुरू](#) होता है तथा दसिंबर और मार्च के बीच चरम पर होता है।

लक्षण:

- इससे संक्रमित होने पर [ठंड लगना](#), [सरि में दर्द](#), शरीर में दर्द और पाँच से 12 दिनों तक तेज़ बुखार रहता है तथा इस मामले में मृत्यु [दुःख](#) से 5% है।

नदान:

- [पोलीमरेज़ चेन रिएक्शन \(PCR\)](#) द्वारा आणविक पहचान अथवा रक्त को वषिणु मुक्त कर इस बीमारी के [प्रारंभिक चरण](#) में इसका नदान किया जा सकता है।
- तदोपरांत [एंज़ाइम-लकिड इम्यूनोसॉर्बेंट सेरोलॉजिकल एस्से \(ELISA\)](#) का उपयोग करके सीरोलॉजिकल परीक्षण किया जा सकता है।

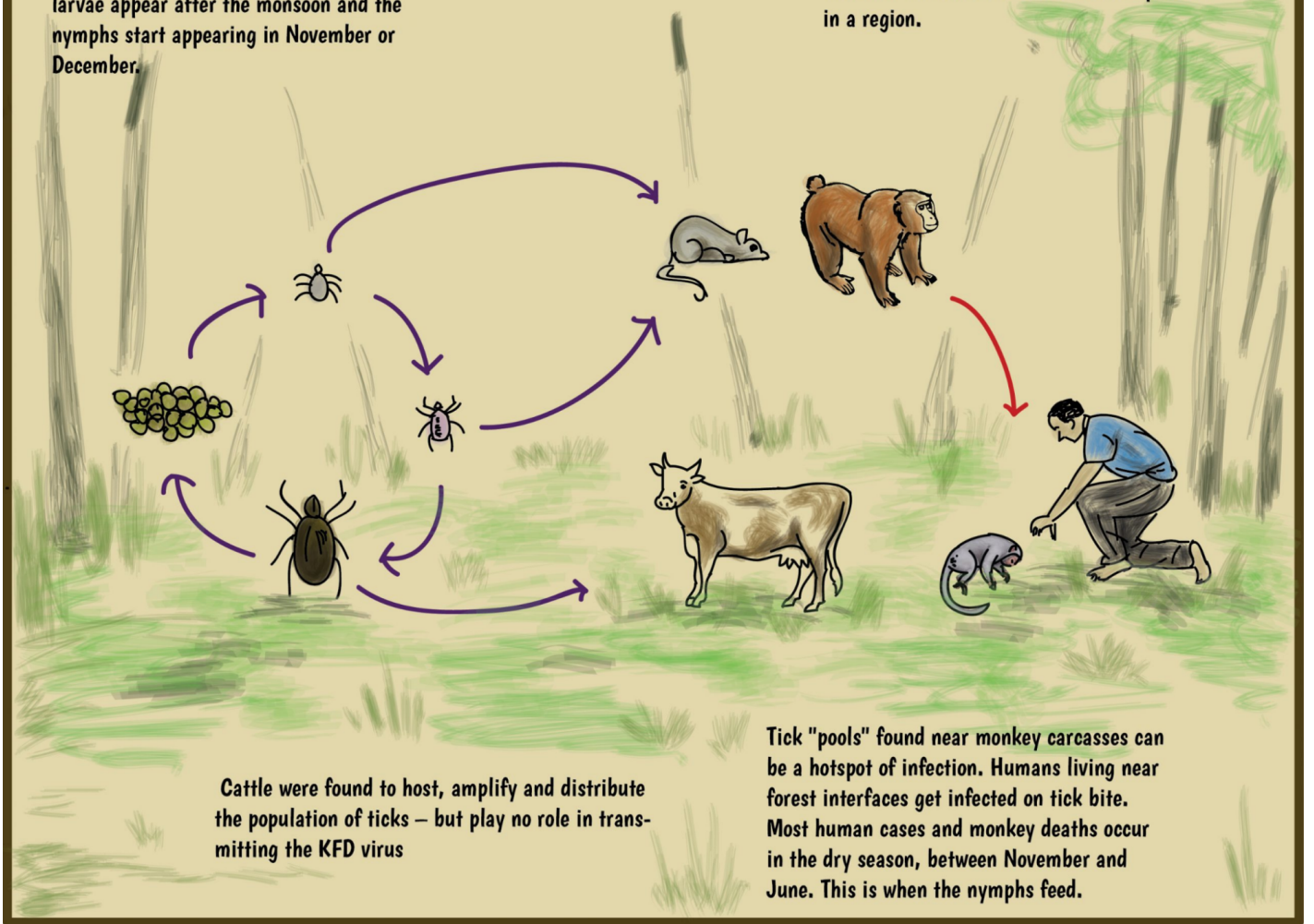
उपचार एवं रोकथाम:

- किसी वशिष्ट उपचार के अभाव में डॉक्टर प्रतिदिन पाए जाने वाले लक्षणों का इलाज करते हैं तथा महत्वपूर्ण संकेतों पर नज़र रखते हैं।
 - राज्य सरकार के निर्णय के अनुरूप इससे पीड़ित मरीज़ों का [नशुलक इलाज](#) किया जा रहा है।
- KFDV की रोकथाम के लिये एक टीका (फॉर्मेलिन इनएक्टिवेटेड [KFDV वैक्सीन](#)) मौजूद है और इसका उपयोग भारत के स्थानिक क्षेत्रों में किया जाता है।
 - [भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद \(ICMR\)](#) वैक्सीन के विकास के लिये इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स के साथ परामर्श कर रही है।
- वन विभाग (N, N-डायथाइल फेनलिसेटामाइड) [DEPA तेल](#) का वितरण कर रहा है जिससे त्वचा पर [टकि \(कलिनी\) के काटने](#) से बचाव के लिये लगाया जाता है।

Several species of ticks, most prominently *Haemaphysalis spinigera*, are the vectors for the Kyasanur Forest Disease virus. The larvae appear after the monsoon and the nymphs start appearing in November or December.

The nymphs feed on multiple hosts, thus picking up and passing on the virus.

Small mammals, such as shrews, may be the reservoir hosts, with monkey deaths an indicator that the virus has become epizootic in a region.



//

क्यासानूर वन:

- क्यासानूर वन कर्नाटक के शमोगा ज़िले में स्थित एक संरक्षित क्षेत्र है।
- यह **पश्चिमी घाट** पर्वत शृंखला का हिस्सा है तथा अपनी समृद्ध जैवविविधता के लिये जाना जाता है।
- इस वन में विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवर हैं जिनमें बाघ, तेंदुए, हाथी और गौर शामिल हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न: नमिनलखिति पर वचिर कीजयि: (2018)

1. पक्षी
2. उड़ती धूल
3. वर्षा
4. बहती हवा

उपर्युक्त में से कौन-से पादप रोग फैलाते हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 3 और 4
- (c) केवल 1, 2 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (d)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtiiias.com/hindi/printpdf/kyasanur-forest-disease-1>

